

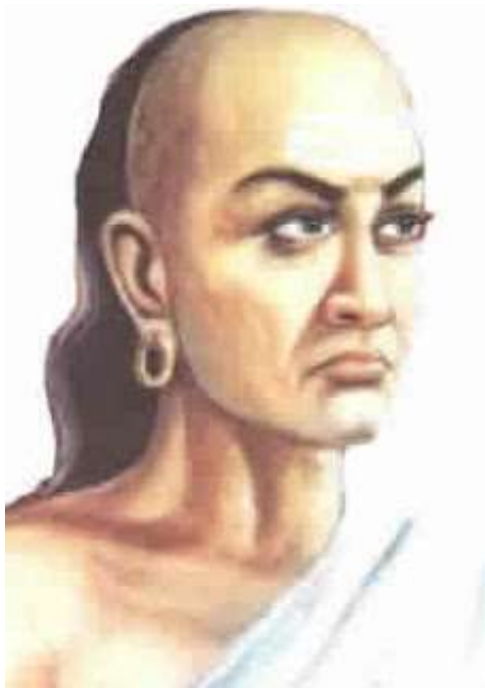
हिंदी साहित्य मार्गदर्शन

TRANSFORMING LIVES



चाणक्य नीति [हिंदी में] : आठवां अध्याय | Chanakya Neeti [In Hindi]: Eighth Chapter

👤 Nisheeth Ranjan 📅 11:29 AM 💬 3 comments



Hindi Chanakya Neeti-Hindi Quotes

चाणक्य नीति : आठवां अध्याय | Chanakya Neeti In Hindi: Eighth Chapter

सातवां अध्याय

नवां अध्याय

नीच वर्ग के लोग दौलत चाहते हैं, मध्यम वर्ग के दौलत और इज्जत, लेकिन उच्च वर्ग के लोग सम्मान चाहते हैं क्यों की सम्मान ही उच्च लोगो की असली दौलत है.

Low class men desire wealth; middle class men both wealth and respect; but the noble, honour only; hence honour is the noble man's true wealth.

दीपक अँधेरे का भक्षण करता है इसीलिए काला धुआ बनाता है. इसी प्रकार हम जिस प्रकार का अन्न खाते हैं. माने सात्विक, राजसिक, तामसिक उसी प्रकार के विचार उत्पन्न करते हैं.

The lamp eats up the darkness and therefore it produces blackened lamp; in the same way according to the nature of our diet (sattva, rajas, or tamas) we produce offspring in similar quality.

हे विद्वान् पुरुष ! अपनी संपत्ति केवल पात्र को ही दे और दूसरो को कभी ना दे. जो जल बादल को समुद्र देता है वह बड़ा मीठा होता है. बादल वर्षा करके वह जल पृथ्वी के सभी चल अचल जीवो को देता है और फिर उसे समुद्र को लौटा देता है.

O wise man! Give your wealth only to the worthy and never to others. The water of the sea received by the clouds is always sweet. The rainwater enlivens all living beings of the earth both movable (insects, animals, humans, etc.) and immovable (plants, trees, etc.), and then returns to the ocean where its value is multiplied a million fold.

विद्वान् लोग जो तत्त्व को जानने वाले है उन्होंने कहा है की मास खाने वाले चांडालो से हजार गुना नीच है. इसलिए ऐसे आदमी से नीच कोई नहीं.

The wise who discern the essence of things have declared that the yavana (meat eater) is equal in baseness to a thousand candalas (the lowest class), and hence a yavana is the basest of men; indeed there is no one more base.

शरीर पर मालिश करने के बाद, स्मशान में चिता का धुआ शरीर पर आने के बाद, सम्भोग करने के बाद, दाढ़ी बनाने के बाद जब तक आदमी नहा ना ले वह चांडाल रहता है.

After having rubbed oil on the body, after encountering the smoke from a funeral pyre, after sexual intercourse, and after being shaved, one remains a chandala until he bathes.

जल अपच की दवा है. जल चैतन्य निर्माण करता है, यदि उसे भोजन पच जाने के बाद पीते है. पानी को भोजन के बाद तुरंत पीना विष पिने के समान है.

Water is the medicine for indigestion; it is invigorating when the food that is eaten is well digested; it is like nectar when drunk in the middle of a dinner; and it is like poison when taken at the end of a meal.

यदि ज्ञान को उपयोग में ना लाया जाए तो वह खो जाता है. आदमी यदि अज्ञानी है तो खो जाता है. सेनापति के बिना सेना खो जाती है. पति के बिना पत्नी खो जाती है.

Knowledge is lost without putting it into practice; a man is lost due to ignorance; an army is lost without a commander; and a woman is lost without a husband.

वह आदमी अभागा है जो अपने बुढ़ापे में पत्नी की मृत्यु देखता है. वह भी अभागा है जो अपनी सम्पदा संबंधियों को सौंप देता है. वह भी अभागा है जो खाने के लिए दुसरो पर निर्भर है.

A man who encounters the following three is unfortunate; the death of his wife in his old age, the entrusting of money into the hands of relatives, and depending upon others for food.

यह बाते बेकार है. वेद मंत्रों का उच्चारण करना लेकिन निहित यज्ञ कर्मों को ना करना. यज्ञ करना लेकिन बाद में लोगों को दान दे कर तृप्त ना करना. पूर्णता तो भक्ति से ही आती है. भक्ति ही सभी सफलताओं का मूल है.

Chanting of the Vedas without making ritualistic sacrifices to the Supreme Lord through the medium of Agni, and sacrifices not followed by bountiful gifts are futile. Perfection can be achieved only through devotion (to the Supreme Lord) for devotion is the basis of all success.

एक संयमित मन के समान कोई तप नहीं. संतोष के समान कोई सुख नहीं. लोभ के समान कोई रोग नहीं. दया के समान कोई गुण नहीं.

There is no austerity equal to a balanced mind, and there is no happiness equal to contentment; there is no disease like covetousness, and no virtue like mercy.

क्रोध साक्षात् यम है. तृष्णा नरक की और ले जाने वाली वैतरणी है. ज्ञान कामधेनु है. संतोष ही तो नंदनवन है.

Anger is a personification of Yama (the demigod of death); thirst is like the hellish river Vaitarani; knowledge is like a kamadhenu (the cow of plenty); and contentment is like Nandanavana (the garden of Indra).

नीति की उत्तमता ही व्यक्ति के सौंदर्य का गहना है. उत्तम आचरण से व्यक्ति उत्तरोत्तर ऊँचे लोक में जाता है. सफलता ही विद्या का आभूषण है. उचित विनियोग ही संपत्ति का गहना है.

Moral excellence is an ornament for personal beauty; righteous conduct, for high birth; success for learning; and proper spending for wealth.

निति भ्रष्ट होने से सुन्दरता का नाश होता है. हीन आचरण से अच्छे कुल का नाश होता है. पूर्णता न आने से विद्या का नाश होता है. उचित विनियोग के बिना धन का नाश होता है.

Beauty is spoiled by an immoral nature; noble birth by bad conduct; learning, without being perfected; and wealth by not being properly utilised.

जो जल धरती में समा गया वो शुद्ध है. परिवार को समर्पित पत्नी शुद्ध है. लोगों का कल्याण करने वाला राजा शुद्ध है. वह ब्राह्मण शुद्ध है जो संतुष्ट है.

Water seeping into the earth is pure; and a devoted wife is pure; the king who is the benefactor of his people is pure; and pure is the brahmana who is contented.

असंतुष्ट ब्राह्मण, संतुष्ट राजा, लज्जा रखने वाली वेश्या, कठोर आचरण करने वाली गृहिणी ये सभी लोग विनाश को प्राप्त

होते हैं।

Discontented brahmanas, contented kings, shy prostitutes, and immodest housewives are ruined.

क्या करना उचे कुल का यदि बुद्धिमत्ता ना हो. एक नीच कुल में उत्पन्न होने वाले विद्वान् व्यक्ति का सम्मान देवता भी करते हैं.

Of what avail is a high birth if a person is destitute of scholarship? A man who is of low extraction is honoured even by the demigods if he is learned.

विद्वान् व्यक्ति लोगो से सम्मान पाता है. विद्वान् उसकी विद्वत्ता के लिए हर जगह सम्मान पाता है. यह बिलकुल सच है की विद्या हर जगह सम्मानित है.

A learned man is honoured by the people. A learned man commands respect everywhere for his learning. Indeed, learning is honoured everywhere.

जो लोग दिखने में सुन्दर है, जवान है, उँचे कुल में पैदा हुए है, वो बेकार है यदि उनके पास विद्या नहीं है. वो तो पलाश के फूल के समान है जो दिखते तो अच्छे है पर महकते नहीं.

Those who are endowed with beauty and youth and who are born of noble families are worthless if they have no learning. They are just like the kimshuka blossoms (flowers of the palasa tree) which, though beautiful, have no fragrance.

यह धरती उन लोगो के भार से दबी जा रही है, जो मास खाते है, दारू पीते है, बेवकूफ है, वे सब तो आदमी होते हुए पशु ही है.

The earth is encumbered with the weight of the flesh-eaters, winebibblers, dolts (dull and stupid) and blockheads, who are beasts in the form of men.

उस यज्ञ के समान कोई शत्रु नहीं जिसके उपरांत लोगो को बड़े पैमाने पर भोजन ना कराया जाए. ऐसा यज्ञ राज्यों को ख़तम कर देता है. यदि पुरोहित यज्ञ में ठीक से उच्चारण ना करे तो यज्ञ उसे ख़तम कर देता है. और यदि यजमान लोगो को दान एवं भेटवस्तु ना दे तो वह भी यज्ञ द्वारा ख़तम हो जाता है.

There is no enemy like a yajna (sacrifice) which consumes the kingdom when not attended by feeding on a large scale; consumes the priest when the chanting is not done properly; and consumes the yajaman (the responsible person) when the gifts are not made.

To read the translation of all the chapters of Chanakya Neeti In Hindi you can navigate to the following link which has the compilation of all the chapters in Hindi.

❶ सम्पूर्ण चाणक्य नीति [हिंदी में] | Complete Chanakya Neeti In Hindi

Note: Some thoughts of Chanakya may be offensive to women, or to Hindus born in so called low caste. I believe in complete equality between man and woman and we detest the Hindu caste system. We have decided to publish his thoughts exactly as written by Acharya Chanakya. We apologize to women, and to anyone else, who may be offended.

Tags: Chanakya Neeti Hindi, Hindi Chanakya Neeti, Kautilya Niti, Chanakya Hindi Quotes, Chanakya Quotes In Hindi, Chanakya Wisdom Quotes, Hindi wisdom Quotes.

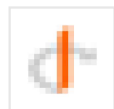
📁 Categories: Chanakya Neeti 55 Chanakya Quotes 52 Great Quotations 140 Hindi Quotes 128
आचार्य चाणक्य 21 चाणक्य नीति 21 चाणक्य सूत्र 23

Newer Post

Older Post


◀ (http://www.hindisahityadarpan.in/2011/11/madhya-parva-chapter-8-translation.html) (http://www.hindisahityadarpan.in/2011/11/chanakya-neeti-in-hindi.html) ▶
in-hindi.html) neeti-in-hindi-seventh-chapter.html)

POST A COMMENT

- 

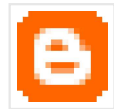
invictusnoname 10/12/2012 3:36 PM

always true about girl

↩ Reply
- 

Anonymous 4/14/2013 4:26 PM

http://www.ashram.org/Publications.aspx

↩ Reply
- 

Unknown 10/09/2015 5:49 PM

Jlvan k Udhar hetu anmaol vachan

↩ Reply

आपकी टिप्पणियाँ एवं प्रतिक्रियाएँ हमारा उत्साह बढ़ाती हैं और हमें बेहतर होने में मदद करती हैं !! अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें बेझिझक दें !!

😊 Emoticon

Enter your comment...

Comment as: Unknown (Google) ▼

Sign out

Publish

Preview

☐ Notify me